व्यो… न करें न पातक रोग । जीवन भर भोगूँ सुख-भोग ॥
हो सदभ्युद… का जब अन्त । मुक्ति मिले तब हे भगवन्त ॥
… दानी, मनमानी ॥ २ ॥

चेतनता न तजे वि… । मन मयूर नाचे निष्काम ॥
वाणी कहे वचन गम्भीर । … कर्म न करे शरीर ॥
कर दानी, मनमानी … ३ ॥

ध्रुव की भाँति पढ़ा दो वेद । ब्रह्म जीव …
करे निरङ्कुश मायावाद । मिटे अविद्याज…
कर दानी, मनमानी ॥ ४ ॥

जाति, पाँति, मत, पन्थ अनेक । दुर दुर छुआ छूत को छेक ॥
सब को फुरे विशुद्ध-विवेक । उपजे धर्म-सनातन एक ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ५ ॥

जिस में सब की शक्ति समाय । मैं भी उस मत को अपनाय ॥
धार विश्व की विमल-विभूति । सिद्ध कहाय करूँ करतूति ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ६ ॥

हे प्रभु ! द्वार दया का खोल । कर दो दान मुझे भूगोल ॥
सागर सारे देश अनेक । सब का ईश बनूँ मैं एक ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ७ ॥

रहैं सहायक पाँचो भूत । बार बार बरसें जीमूत ॥
बिजली करे अनूठे काम । फलें सिद्धियों के परिणाम ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ८ ॥

कर कुबेर को चकनाचूर । धन से कोष भरूँ भरपूर ॥
कमला कर मेरे घर वास । जाय न अपने पति के पास ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ९ ॥

भाँति भाँति के पत्तन, ग्राम। बन जावें सारे सुख-धाम ॥
सब को मिले मेल की लूट। मिट जावे आपस की फूट ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १० ॥

कुल्या, कूल बहैं अविराम। फूलें फलें कानन, आराम ॥
प्राणी पाय शुद्ध जल वायु। भय तज भोगें पूरी आयु ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ११ ॥

के हेतु। बँधें सिन्धु, नदियों के सेतु ॥
अन्तर त्याग। मिलें समस्त भूमि के भाग ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १२ ॥

गगन-गोल में उड़ें विमान। जल में तरें घने जलयान ॥
धरणीतल पर दौड़ें रेल। चलें अन्य वाहन पँचमेल ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १३ ॥

घने राजपथ चारों ओर। चलें बटोही मिलें न चोर ॥
सुन्दर पादप रोकें धूप। दान करें जल वापी, कूप ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १४ ॥

फलें सदुद्यम के व्यवहार। शिल्प रसायन बढ़ें अपार ॥
पौरुष-रवि का पाय प्रकाश। उन्नति नलिनी करे विकाश ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १५ ॥

लगे भूमि पर स्वल्प लगान। जल पावें बिन मोल किसान ॥
उपजें विविध भाँति के माल। पड़े न महँगी और अकाल ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १६ ॥

आयुर्वेद-विहित कविराज। सादर सब का करें इलाज ॥
बटें सदाव्रत रुकें न हाथ। मरें न भिक्षुक, दीन, अनाथ ॥
कर दानी, मनमानी ॥ १७ ॥

दो दे विद्यालय सब ठौर । खोलें अध्यापक सिरमौर ॥
करें यथा विधि विद्या-दान । उपजावें विदुषी, विद्वान ॥
कर दानी मनमानी ॥ १८ ॥

साङ्ग वेद, दर्शन, इतिहा[illegible] । ललित काव्य,साहित्य-विलास ॥
गणित,नीति,वैद्यक,संगीत । पढ़ प्रजा-जन बने विनीत ॥
कर दानी, मनमानी ॥ [illegible] ॥

सीखें सैनिक शस्त्र-प्रयोग । वीर बने स[illegible]
धारें टेक टिकाय कृपाण । वारें धर्मराज प[illegible]
कर दानी, मनमानी ॥ २० ॥

अखिल बोलियों के भंडार । विद्या के रस-रङ्ग-विहार ॥
भुवन-भारती के शृङ्गार । रहें सुरक्षित ग्रन्थागार ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २१ ॥

निकलें नये नये अखबार । पाठक पढ़ें विचार विचार ॥
सब के कर्म, कुयोग, सुयोग । प्रकट करें सम्पादक लोग ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २२ ॥

जो सदर्थ का सार निचोड़ । परखें पक्षपात को छोड़ ॥
शुद्ध-न्याय को करें प्रसिद्ध । बने समालोचक वे सिद्ध ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २३ ॥

जिन के पास न राग, न रोप । सत्य कहैं सब के गुण, दोष ॥
ऐसे भूतल-तिलक-प्रधान । विधि निषेध का करें विधान ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २४ ॥

युक्तिवाद-पटु-निर्भय-वीर । धीर, महा-मति अति गम्भीर ॥
कर्म-प्रवीण, कुलीन सपूत । परम-साहसी विचरें दूत ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २५ ॥

सम्वित्सागर परम सुजान । नीति-विशारद न्याय-निधान ॥
पर-हित कारी सत्कवि राज । सब से हो संगठित समाज ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २६ ॥

न्यायाधीश बड़े पद पाय । करें [illegible] मारालिक-न्याय ॥
चाकर चलें न टेढ़ी चाल । खाय न चक्र घूँस का माल ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २७ ॥

[illegible] लोग । चलें न जाल भरे अभियोग ॥
[illegible] वीर वकील । बने न न्याय-विपिन के भील ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २८ ॥

हेल मेल का बढ़े प्रचार । तजें प्रतारक अत्याचार ॥
सीख राज-पद्धति के मंत्र । प्रजा रहे सानन्द, स्वतंत्र ॥
कर दानी, मनमानी ॥ २९ ॥

करे न कोप महासुर-मोह । उठे न अधम राज-विद्रोह ॥
चलें न छल-भट के नाराच । पिये न रक्त प्रपञ्च-पिशाच ॥
कर दानी मनमानी ॥ ३० ॥

रहे न कोई भी परतंत्र । बने न नीचों के षड्यंत्र ॥
बैर, फूल की लगे न लाग । मार काट की जले न आग ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ३१ ॥

चतुरङ्गिनी चमू कर कोप । करदे खल-मण्डल का लोप ॥
गरजें धीर, वीर घन-घोर । भागें प्रतिभट, वञ्चक, चोर ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ३२ ॥

पकड़ें अस्त्र शस्त्र रणजीत । बाधक दुष्ट रहें भयभीत ॥
जो कर सकें पराभव घोर । बने न वैसे करुणा-कठोर ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ३३ ॥

राज-कर्म-पद्धति की चूक । जो कवि कह डाले दो टूक ॥
उस को मेरा चक्र-प्रचण्ड । छल से कभी न देवे दण्ड ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ३४ ॥

सुख से एक बटोरे माल । एक रहे दुखिया कंगाल ॥
अपना कर ऐसे दो देश । मैं न कहाऊँ अन्ध-नरेश ॥
कर दानी, मनमानी ॥ ३५ ॥

जिस आलस्य-दास के पास । दीर्घसूत्रता
ऐसे दल का दृश्य निहार । दूर रहैं प्यारे
कर दानी, मनमानी ॥ ३६ ॥

चाटुकार, बिट, षंढ, सपाट, । भांड़, भगतिये, भडुआ, भाट, ॥
पाखंडी, खल, पिशुन, कलाल, । सब का संग तजें कुल-पाल ॥
करदानी मनमानी ॥ ३७ ॥

ज्वारी, जार, बधिक, ठग, चोर, । अधम, आततायी, कुलबोर ॥
लोलुप, लम्पट, लंठ, लबार, । बढ़ें न ऐसे असुर-असार ॥
करदानी, मनमानी ॥ ३८ ॥

हिंसक लोग कृपालु कहाय, । शुद्ध निरामिष भोजन पाय ॥
करें दुग्ध, घृत, से तन पीन, । कभी न मारें खग, मृग, मीन ॥
करदानी, मनमानी ॥ ३९ ॥

करे कुमारी जिस की चाह । रचे उसी के साथ विवाह ॥
बँधे न बारे बर के साथ । बिके न बूढ़े नर के हाथ ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४० ॥

धरें न मौर धनी बहु बार । रहैं न बित्त विहीन कुमार ॥
करे न बिधवा-वृन्द बिलाप । बढ़े न गर्भ-पतन का पाप ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४१ ॥

ठगें न कुलटा के रस-रंग । करे न मादकता मति-भंग ॥
मायिक-मत की लगे न छूत । कायर करें न कल्पित-भूत ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४२ ॥

मात, पिता, गुरु, भूपति, मित्र । सिद्ध, प्रसिद्ध, पवित्र-चरित्र, ॥
गणयगुणी--जन, धन्य-धनेश । सब का मान करें सब देश ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४३ ॥

...दद, छात्र, । अध्यापक, भट, साधु, सुपात्र, ॥
...क, नट, धार, । सब को मिला करें उपहार ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४४ ॥

जो जगदम्बा को उर धार । करें अलौकिक--आविष्कार ॥
उन देवों के दर्शन पाय । पूजा करूँ किरीट झुकाय ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४५ ॥

जो निशङ्क नामी कविराज । आय निहारें राज--समाज ॥
करें प्रबन्धों के गुण--गान । वह पावे दरबारी-दान ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४६ ॥

घटे न मङ्गल, पुण्य--प्रताप । बढ़े न पापजन्य--परिताप ॥
भाव सत्ययुग का भर जाय । कलियुग की नानी मर जाय ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४७ ॥

यों सामाजिक--धर्म पसार । करूँ प्रजा पर पूरा प्यार ॥
पकड़े न्याय नीति का हाथ । विचरे दण्ड दया के साथ ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४८ ॥

नानाविध विभाग, संयोग । दिव्य, दृश्य देखें सब लोग ॥
धरें सुकृति का सीता नाम । समझें मुझे दूसरा राम ॥
करदानी, मनमानी ॥ ४९ ॥

[illegible] बकवाद किया बेजोड़। बस होली सिड़ियों की होड़॥
धार म[illegible]भागी-मुख मौन। तेरी सनक सुनेगा कौन॥
करदानी, मनमानी॥ ५०॥
पाया घोर-नरक म[illegible]वास। बीते हाय न हाय! पचास॥
आ पहुंचा है अन्तिम [illegible]। क्या होगा बन कर भूपाल॥
करदानी, मनमान[illegible]॥ ५१॥
अब तो सब से नाता तोड़। बन्धन-[illegible] दुराशा [illegible]
रे! मन ज्ञान-सिन्धु के मीन। हो जा परम[illegible]
करदानी, मनमानी॥ ५२॥

पञ्चराजकीकृष्णोपासना ७

(दोहा)

भगवद्गीता में मिला, सदुपदेश का सार।
क्यों न कहैं श्रीकृष्ण को, गौरव का अवतार॥ १॥

वेदान्त-विलास ८

+(गीत)

बांके विहारी की बाजी बँसुरिया ॥टेक॥
बंशी की तानें सुने सारी सखियाँ, साड़ी सजें धौरी, काली सिंदुरिया।
बांके विहारी की बाजी बँसुरिया॥
देखे दिखावे जिसे रास रसिया, फोड़ै उसी की रसीली कमु रिया॥
बाँके विहारी की बाजी बँसुरिया॥

+ इस गीत के शब्दोंपर विशेष ध्यान न देकर केवल भावार्थ पर गहरी गवेषणापूर्वक विचार कीजिये। वेदान्त है। गौर को थड़ न समझिये (पञ्चराज)।

सोवे न जागे न देखे न सपना, प्यारी की चौथी अवस्था है तुरिया।
बाँके बिहारी की बाजी बँसुरिया ॥
माया के धागे में मन के पिरोये, न्यारा नहीं कोई माला से गुरिया ॥
बाँके बिहारी की बाजी बँसुरिया ॥
सत्ता पखुरियों में फूलों की [illegible], फूलों की सत्तामें पाई पखुरिया।
बाँके [illegible]हारी की बाजी बँसुरिया ॥
[illegible] ारे ब्रज का, ऊधो! उसे कैसे भाने मधुरिया ॥
बाँके बिहारी की बाजी बँसुरिया ॥
[illegible]वे त्रिभंगी ललन को, सीधी करी शंकरा सी कुबरिया।
बांके बिहारी की बाजी बँसुरिया ॥४॥

योगीश्वर-कृष्णचंद्र ९

(दोहा)

गीता में जिन के सुने, परम ज्ञान के गीत।
क्या वे कृष्ण समाज से, चलते थे विपरीत? ॥१॥

प्रेमीपञ्च का प्रेमोद्धार १०

(गीत)

अब तो बने द्वारिकाधीश,
श्री जगदीश कहानेवाले ॥टेक॥
सर्वाधार, विशुद्ध, अकाय, उतरे बन्दीगृह में आप,
जन्मे पुत्र--भाव अपनाय, ऊँचा पितु--पद पानेवाले।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
[redacted]

पुण्यश्लोक, अखण्ड-प्रताप, करते प्यारे-कर्म-कलाप,
नाचे ब्रज-मण्डल में आप, सब को नाच नचानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
जितने उठते डांकू घोर, उन को देते दण्ड-कठोर,
देखें आप न अपनी ओर, माखन, छाछ चुरानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
विजयी जाने सब संसार, जड़धी-जरा...
भागे भूल विजय-व्यापार, रण में पीठ दि...
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
बनिता रहीं स्वकीया सङ्ग, परखे परकीया के अङ्ग,
मारा मार किया रस-भङ्ग, रीझे रसिक रिझानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
प्यारे ब्रज का बास विहाय, प्रभु सौराष्ट्र-द्वीप में जाय,
महिमा महा-राजों की पाय, चमके धेनु चरानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
जीता जगती-खण्ड विशाल, दीना नाथ नहीं अब ग्वाल,
निर्भय बन बैठे भूपाल, बन में बेणु बजानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
आकर मिला सुदामा यार, पूजा कर स्वागत सत्कार,
दानी बने दयालु-उदार, तण्डुल-चाब चबानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
सौंपा अर्जुन को उपदेश, बण्टाढार किया सब देश,
कतरे सर्व-नाश के केश, जय सद्धर्म बढ़ानेवाले ।
अ० ब० द्वा० श्री० कहानेवाले ॥
कल्पित भेद-हीन के भेद, यद्यपि नहीं बताते वेद,

तोभी मिलते अन्तरछेद, सब में श्याम समानेवाले।
अ० ब० ह्वा० श्री० कहानेवाले ॥

प्यारे भावुक-भक्त सुजान, आओ कर प्रेम-रस पान,
मूँदे मन्दिर में भगवान, "भूर" भोग लगानेवाले ॥
अ० ब० ह्वा० श्री० कहानेवाले ॥

कृष्णोत्कर्ष ११

(दोहा)

होगा दूसरा, श्री ब्रज-राज समान।
आल्हा ऊदल आदि के, कौन करे गुण-गान ॥१॥

आर्य्य पञ्चकी आल्हा १२

(वीर-छन्द)

हे! वैदिक-दल के नरनामी, हिन्दू-मण्डल के करतार।
स्वामि सनातन-सत्य-धर्म के, भक्ति-भावना के भरतार ॥
सुत वसुदेव, देवकीजी के, नन्द, यशोदा के प्रिय-लाल।
ग्राहक-चतुर रुक्मिणी जी के, रसिक-राधिका के गोपाल ॥१॥

मुक्त, अकाय बने तन-धारी, श्रीपति के पूरे अवतार।
सर्व-सुधार किया भारत का, कर सब शूरों का संहार ॥
ऊँचे अगुआ यादव-कुल के, वीर अहीरों के सिरमौर।
दुविधा दूर करो द्वापर की, ढालो रङ्ग ढङ्ग अब और ॥२॥

भड़क भुला दो भूत काल की, सजिये वर्तमान के साज।
फैशन फेरे इंडिया भर के, गोरे-गाड बनो ब्रजराज ॥
गौर-वर्ण वृषभानु-सुता का, काढ़ो, काले तन पर तोप।
नाथ! उतारो मोरमुकुट को, सिर पै सजो साहिबी-टोप ॥३॥

पोछ चन्दन पोंछ, लपेटो, आनन की श्री ज्योति जगाय।
अञ्जन अँखियों में मत आँजो, आला ऐनक लेहु लगाय॥
रत्न-धर कानों भटका लो, कुण्डल काढ़, मेकराफून।
तज पीताम्बर, कम्बल ला, डाँटो कोट और पतलून॥४॥

पटक पादुका, पहिनो प्यारे, बूट ... का लुक़दार।
डालो डबलवाच पाकट में, चमकें चे...
रखदो गाँठ गठीली लकुटी, छाता, बेंत ब...
मुरली तोड़ मरोड़ बजाओ, बाँकी-बिगुल सुने ...

फरिया चीर फाड़ कुबरी को, पहिनालो पँचरंगी गौन।
अबलक़ लेडी लाल तिहारी, कहिये ! और बनेगी कौन॥
भुँदना नहीं किसी मन्दिर में, काटो होटल में दिन रात।
पर नवखौआ ताड़ न जावें, बढ़िया खान, पान की बात॥६॥

बैनतेय तज व्योम यान पै, करिये चारों ओर बिहार।
फक फक फूँ फूँ फूँको चुरटें, उगलें गाल धुआँ की धार॥
यों उत्तम पदवी फटकारो, माधो मिस्टर नाम धराय।
बाँटो पदक नई प्रभुता के, भारत जाति-भक्त हो जाय॥७॥

कह दो सुबुध-विश्वकर्मा से, रच दे ऐसा हाल-विशाल।
जिस पै गरमी, नरमी वारे, कांगरेस-कुल की पण्डाल॥
सुर, नर, मुनि डेलीगेटों को, देकर नोटिस, टेलीग्राम।
नाथ ! बुलालो, उस मण्डप में, बैठें जेंटिलमैन तमाम॥८॥

उमगें सभ्य-सभासद सारे, सर्वोपरि-यश पावें आप।
दर्शक-रसिक तालियाँ पीटें, नाचें मंगल, मेल, मिलाप॥

जो जन विविध बोलियाँ बोले, टर्रीली गिट पिट को छोड़।
रोको! उस गोबरगणेश को, करे न सर-भाषा की होड़ ॥९॥

वेद, पुराणों पर करते हैं, आरज, हिन्दू, वाद, विवाद।
कान लगा कर सुनलो स्वामी, सब के कूट-कटीले नाद ॥
दोनों के अभिलषित पन्थों पै, बीच सभा में करो विचार।
... गाँठ किस ... कितना है, ठीक बता दो न्याय पसार ॥१०॥

... ने वेद दिये हैं, यदि विद्या बल के भंडार।
... ज्ञाता क्षय न करते, तो भी अभिनव आविष्कार ॥
समझा दो वैदिक सुजनों को, उत्तम कर्म करें निष्काम।
जिन के द्वारा सब सुख पावैं, जीवित रहैं कल्प लों नाम ॥११॥

निपट पुराणों के अनुगामी, ऊलें निरखो इनकी ओर।
निडर आप को भी कहते हैं, नर्त्तक, जार, भगोड़ा, चोर ॥
प्रतिदिन पाठ करें गीता के, गिनते रहैं रावरे नाम।
पर हा! मनमौजी मतवाले, बनते नहीं धर्म के धाम ॥१२॥

कलुष, कलंक कमाते हैं जो, उन को देते हैं फल चार।
कहिये? इन तीरथ देवों के, क्यों न छीनते हो अधिकार ॥
यों न किया तो डर न सकेंगे, डाँकू उदरासुर के दास।
अधम, अनारी, नीच, करेंगे, मनमाने सानन्द–बिहार ॥१३॥

वैदिक, पौराणिक पुरुषों में, टिके टिकाऊ मेल, मिलाप।
गैल गहैं अगले अगुओं की, इतनी कृपा कीजिये आप ॥
जिस विधि से उन्नत हो बैठे, यूरुप, अमरीका, जापान।
विद्या, बल, प्रभुता, उन की सी, दो भारत को भी भगवान ॥१४॥

युक्ति-वाद से निपट निराली, सुनलो बीर अनूठी! बात।
इस का भेद न पाया अबलों, है अवितर्क-विश्व-विख्यात॥
योग बिना क्यों री मरियम ने, कैसे जने मसीह सपूत।
कैसे शकुलक़मर का [illegible], छाया रहित खुदा का दूत॥१५॥

इस घटना की सम्भवता को, [illegible] तर्क-तुला पै तोल।
गड़बड़ है तो खोल दीजिये, ढिल्लड़ ढा [illegible] की [illegible]
यह प्रस्ताव और भी सुनलो, उत्तर ठीक बता [illegible]
किस प्रकार से फल देते हैं, केवल कर्म चेतन [illegible]

देव! आदि के अधिवेशन में, पूरे करना इतने काम।
हिप हिप हुर्रों के सुनते ही, खाना टिफ़न पाय आराम॥
झंझट, झगड़े मतवालों के, जानो सब के खण्ड-विभाग।
तीन, चार दिन की बैठक में, कर दो संशोधन बेलाग॥१७॥

बनिये गौर श्यामसुन्दर जी, ताक रहे हैं दर्शक-दीन।
हम को नहीं हँसाना बन के, बाघ, धितुराडी, कछुआ, मीन॥
भार सामयिक-नेतापन को, दूर करो भूतल का भार।
निष्कलङ्क-अवतार कहेंगे, "शङ्कर" सेवक बारम्बार॥१८॥

पञ्च परिचय १३

(दोहा)

बैठे सण्ड-समाज में, पाकर उन्नत-मञ्च।
यों पुकारते हैं सुनो, परम-प्रतापी पञ्च॥१॥

पञ्च पुकार १४

(पञ्चास्य-छन्द)

पञ्चशरघ्न, पुरघ्न, पिनाकी, पञ्चानन, पशुराज ।
पाँच प्रचण्ड नाम शङ्कर के पञ्चनाद इव आज ॥
उन्हें ऊंचा उच्चारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ १ ॥

वारिधि गुरु-ज्ञानी, मेरे वासर--सूर ।
सा अभिमानी मन है, मेरा भी भरपूर ॥
उलझने को झिंगारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २ ॥

फागुन का फल फाग फबीला, फूला ऐप्रिल--फूल ।
दो गुब्बा गटक दुलत्ती मारूँ, हाँकूँ अन्ध--उसूल ॥
तीसरी आँख उघारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ३ ॥

चुस्त पजामा, ढिलमिल जामा, सजे साहिबी--टोप ।
ताकें तसलीमुल--फ़ैशन को, मियाँ, पुजारी, पोप ॥
नक्क ओछी न उतारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ४ ॥

चूनरि चीर, फाड़दी फरिया, पहँना लाया गौन ।
लेडी-पञ्च ब्लैक-दुलहिन को, दाद न देगा कौन ॥
प्रिया के पैर पखारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ५ ॥

सुन सुन मेरे शब्द, बोलियाँ, चौंक पड़ें चण्डूल ।
पर जो हिन्दू कथन करेगा, हिन्दी के प्रतिकूल ॥

उसे धमका धिकारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ६ ॥

इँगलिश-डा.., नागरी-गेंडा, उरदू—दुम्बा तीन ।
निकलें पेपर, प..., ..साले, मेरे रहैं अधीन ॥
केहरी स... ...कारूँगा ।
किसी से कभी न हा... ॥७॥

उरदू के बेनुक्त रक़मचे, लिक्खूँ क़...
बीनी खुद बुरीद को पढ़लो, बेटी जोद ...
चुनीदा नज्र गुज़ारूगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥८॥

जिस मण्डल में मतवालों का, उफनेगा उन्माद ।
मैं भी उस दल में करने को, बेहूदा बकबाद ॥
बिना पाथेय पधारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥९॥

जिस के तर्क-जलधि में डूबे, मत,पन्थों के पोत ।
उस के सत्यामृतप्रवाह का, क्यों न बहैगा सोत ॥
बनूँगा मीन मझारूँगा ।
किसी से कभीन हारूँगा ॥१०॥

भूला गिरिजा,गिरिजापति को, मैं गिरजा में जाय ।
समझा सगुण गाड—पुत्र के, गोरी प्रभुता पाय ॥
श्याम कुल को उद्धारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥११॥

फड़क फूट कर फुट्टेलों में, फूल फली है फूट ।
भेद—भक्त भट—मण्डल मेरा, क्यों न करेगा लूट ॥

पुजे पूजा न बिसारूँगा।
किसी से कभी न हारूँगा ॥१२॥

ठेके पर लेकर वैतरणी, देकर [illegible]ढ़ी मूँछ।
वाटर-बायसिकिल के द्वारा, [illegible] गाय की पूँछ॥
मरों को [illegible]र उतारूँगा।
[illegible] से कभी न हारूँगा ॥१३॥

[illegible]क बिकटजाल में, जूझें फँसे गमार।
सबको सुलझा दूँगा, कर के एकाकार॥
महा-सद्धर्म प्रचारूँगा।
किसी से कभी न हारूँगा ॥१४॥

रसिक रहूँगा राजभक्ति का, बैठ प्रजा की ओर।
बाँध बधिक-विद्रोही-दल को, दूँगा दण्ड कठोर॥
खटकतों को सँहारूँगा।
किसी से कभी न हारूँगा ॥१५॥

गोरे गुरु-गण की ख़ातिर में, खरच करूँगा दाम।
दमकेगा दुमदार-सितारा, बन के जुगनू-नाम॥
ख़िताबों को फटकारूँगा।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ १६ ॥

लण्डन में कर बास बना हूँ, बैरिस्टर कर पास।
घेर मुवक्किल घटिया से भी, लूँगा नक़द पचास॥
बड़प्पन को विस्तारूँगा।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ १७॥

जग में जीवन भर भोगूँगा, मन माने सुख-भोग।
परम-रङ्क महँगी के मारे, मारा तजें लघु-लोग॥

उन्हें तोभी न निहारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ १८ ॥

यदि आगे अ[illegible] से भी बढ़िया, दारुण पड़े दुकाल ।
तो जड़ जमजावे [illegible]तिं की, थलके तोंद-विशाल ॥
प्रतिष्ठा के, [illegible] धारूँगा ।
किसी से कभी न हा[illegible] ॥ १९ ॥

प्रति मुद्रा पर एक टका से, कम न कर[illegible]
धन कुबेर का मान मिटादूँ, लाद ब्याज पर [illegible]
ग़रीबों के घर जारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २० ॥

पढ़ बन्देमातरम करेंगे, सोदा सब दल्लाल ।
तिगुनी दर लेकर बेचूँगा, निरा विदेशी-माल ॥
स्वदेशी-जाल पसारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २१ ॥

इतने पुतली-घर खोलूँगा, बन कर मालामाल ।
जिन को पूरी मिल न सकेगी, पामर-कुल की खाल ॥
दही में मूसल मारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २२ ॥

प्रथम महत्ता के मन्दिर पै, सुयश-पताका गाढ़ ।
फिर फूटे लघुता के घर में, दबक दिवाला काढ़ ॥
रक़म औरों की मारूँगा ॥
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २३ ॥

मदिरा, खजुरी, भंग, कसूमा, आसव, सर्व समान ।
इन पवित्र मादकद्रव्यों का, कर पंचामृत पान ॥

नशीली बात विचारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २४ ॥

जिस में वीरों की अभिरुचि का, चल ... न सकेगा खोज ।
ऐसा कहीं मिला यदि मुझको ... नाटक-कुल का भोज ॥
मुखानन्दी न ... ारूँगा ।
किसी ... कभी न हारूँगा ॥ २५ ॥

... धन्वन्तरि के, अमृत-कुम्भ का मोल ।
...ाती डाःकटरी की, बढ़िया बोतल खोल ॥
पिऊँगा जीवन वारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २६ ॥

जो जगदीश बनादे मुझको, अनथक थानेदार ।
तो छल छोड़ धर्म सागर में, गहरी चूबक मार ॥
अकड़ के अङ्ग निखारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २७ ॥

यद्यपि मुझको नहीं सुहाते, वैदिक-दल के कर्म ।
ठाठ बदलता हूँ अब तो भी, धार सनातन-धर्म ॥
इसी से जन्म सुधारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २८ ॥

पास करूँगा कुलपद्धति के, परमोचित—प्रस्ताव ।
हां पर कभी नहीं बदलूँगा, मैं गुण, कर्म, स्वभाव ॥
गपोड़े मार बगारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ २९ ॥

बालक उपजेंगे नियोग की, अब न रुकेगी राह ।
अक्षत-योनि बाल-विधवा से, अबस करूँगा ब्याह ॥

पके पेठे न बनारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ३० ॥

नई चाल के गु... ...कल खोलूँ, फाँस फ़ीस के फन्द ।
निरख परख दात... ...पावेंगे, दिव्य—दर्शनानन्द ॥
पुरानी रीत ...िमारूँगा ।
किसी से कभी न हारू... ॥ ३१ ॥

अगुआ बनूं जेल में पड़ के, निकलूँ पिएड ...
बैठ बैठ कर नर-यानों पै, पटपट— पूजा ...
हुमक हूँ हूँ हुंकारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ३२ ॥

गरजूँगा क़ौमीमजलिस में, गरमी नर्मी पाय ।
सूरत नहीं बिगड़ने दूँगा, लात लीतड़े खाय ॥
लीडरों को ललकारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ३३ ॥

यदि चौमुख बाबा की बिटिया, बनी रही अनुकूल ।
तो तुकड़ समझेंगे मुझ को, कवितारएय-बबूल ॥
कटीला पाल पसारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ३४ ॥

आठ बटा अट्ठावन पढ़लो, पाठक पञ्च-पुकार ।
जो मृदु-मुख लिक्खाड़ लिखेगा, इस का उपसंहार ॥
उसे दे दाद दुलारूँगा ।
किसी से कभी न हारूँगा ॥ ३५ ॥

धनी से निर्धन १५

(दोहा)

काम रुखाई से पड़ा, सूख [illegible] सब तीत ।
घेरा घोर-दरिद्र ने, है [illegible] हुआ बिपरीत ॥१॥

मंतरोदन १६

(रौला छन्द)

[illegible] क्रूर प्रतिकूल, काल का अन्त न होगा ।
[illegible] शुभ-गति से मेल, मृत्यु पर्य्यन्त न होगा ॥
क्या अब दुःख दरिद्र, हमारा दूर न होगा ।
क्या अनुचित दुर्दैव, कोप कर्पूर न होगा ॥१॥

हो कर मालामाल, पिता ने नाम किया था ।
मैंने उन के साथ, न कोई काम किया था ॥
विद्या का भरपूर, इष्ट अभ्यास किया था ।
पर औरों की भाँति, न कोई पास किया था ॥२॥

उद्यम की दिन रात, कमान चढ़ी रहती थी ।
यश के सिर पै वर्षा, उपाधि मढ़ी रहती थी ॥
कुल-गौरव की ज्योति, अखण्ड जगी रहती थी ।
घर पै भिक्षुक—भीड़, सदैव लगी रहती थी ॥३॥

जीवन का फल शुद्ध, पूज्य-पितु पाय चुके थे ।
कर पूरे सब काम, कुलीन कहाय चुके थे ।
सुन्दर स्वर्ग समान, विलास विसार चुके थे ।
हा ! हम उन का अन्त, अनन्त निहार चुके थे ॥४॥

बाँध जनक की पाग, बना मुखिया घर का मैं
केवल परमाधार, रहा कुनबे भर का मैं ॥
सुख से पहली भाँति, निरङ्कुश रहता था मैं।
घर का देख बिगा.. न कुछ भी कहता था मैं ॥५॥

जिनका सञ्चित कोश, खिला.. कर खाया मैं ने।
कर के उन की होड़, न द्रव्य .. .या मैं ने ॥
अटका हेकड़ ह्रास, नहीं पहँचाना ..
घटती का परिणाम, कठोर न जाना ..

चेरे चाकर चोर, पुरानी बान बिगाड़ी।
दिया दिवाला काढ़, बनी दूकान बिगाड़ी ॥
आधे दाम चुकाय, बड़ों की बात बिगाड़ी।
छोड़ धर्म का पन्थ, प्रथा--विख्यात बिगाड़ी ॥७॥

अटके डिगरीदार, दया कर दाम न छोड़े।
छीन लिये धन धाम, ग्राम अभिराम न छोड़े ॥
बासन बचा न एक' विभूषण वस्त्र न छोड़े।
नाम रहा निरुपाधि, पुलिस ने शस्त्र न छोड़े ॥८॥

न्याय सदन में जाय, दरिद्र कहाय चुका हूं।
सब देकर इन्साल, वेंएट पद पाय चुका हूं ॥
अपने घर की आप, विभूति उड़ाय चुका हूं।
पर संकट से हाय, न पिण्ड छुड़ाय चुका हूं ॥९॥

बैठ रहे मुख मोड़, निरन्तर आने वाले।
सुनते नहीं प्रणाम, लूट कर खाने वाले ॥

उगल रहे दुर्वाद, बड़ाई करने वाले।
लड़ते हैं बिन बात, अड़ी पै मरने वाले ॥१०॥

कविता सुने न लोग, न नामी कवि कहते हैं।
अब न विज्ञ, विज्ञान, व्योम का रवि कहते हैं ॥
धर्म धुरन्धर धीर, न बन्दी जन कहते हैं।
मुझ को सब कंगाल, धनी निर्धन कहते हैं ॥११॥

हाय बिरद विख्यात, आज विपरीत हुआ है।
[illegible] विशुद्ध निश्शङ्क, महा भयभीत हुआ है ॥
कुल दरिद्र की मार, सहै रस भङ्ग हुआ है।
जीवन का मग देख, सदाशिव तङ्ग हुआ है ॥१२॥

प्रतिभा को प्रतिवाद, प्रचण्ड पछाड़ चुका है।
आदर को अपमान, कलङ्क लताड़ चुका है ॥
पौरुष का सिर नीच, निरुद्यम फोड़ चुका है।
विशद-हर्ष का रक्त, विषाद निचोड़ चुका है ॥१३॥

दरसे देश उदास, जाति अनुकूल नहीं हैं।
शत्रु करें उपहास, मित्र सुख-मूल नहीं हैं ॥
अनुचित नातेदार, कहैं कुछ मेल नहीं हैं।
रूठ रहे सब लोग, सुमति का खेल नहीं हैं ॥१४॥

मङ्गल का रिपु घोर, अमङ्गल घेर रहा है।
विषम-त्रास के बीज, विनाश बखेर रहा है ॥
दीन-मलीन-कुटुम्ब, कुगति को कोस रहा है।
सब के कण्ठ अदम्य, दरिद्र मसोस रहा है ॥१५॥

दुखड़ों की भरमार, यहां सुख साज नहीं है।
किस का गोरस, भात, मुठी भर नाज नहीं है॥
भटकें चिथड़े धार, धुले पट पास नहीं है।
कुनबे भर में कौन, अधीर, उदास नहीं है॥१६॥

मकी, मटरा, मोठ, भुनाग चबा लेते हैं।
अथवा रूखे रोट, नमक से खालेते हैं॥
सत्तू, दलिया, दाल, पेट में भर लेते हैं।
गाजर, मूली पाय, कलेवा कर लेते हैं॥१७॥

बालक चोखे खान, पान को अड़ जाते हैं।
खेल खिलोने देख, पिछाड़ी पड़ जाते हैं॥
वे मनमानी बस्तु, न पाकर रोजाते हैं।
हाय हमारे लाल, सुबकते सो जाते हैं॥१८॥

सिर से संकट-भार, उतार न लेगा कोई।
मुझ को एक छदाम, उधार न देगा कोई॥
करुणा-सागर-वीर, कृपा न करेगा कोई।
हम दुखियों के पेट, न हाय भरेगा कोई॥१६॥

फूलफूल कर फूल, फली, फल खाने वाले।
व्यञ्जन, पाक, प्रसाद, यथारुचि पाने वाले॥
गोरस, आदि अनेक, पुष्ट रस पीने वाले।
हाय हुये हम शाक, चनों पर जीने वाले॥२०॥

घर में कुरते कोट, सलूके सिल जाते हैं।
उजरत के दो चार, टके यों मिल जाते हैं॥

जब कुछ पैसे हाथ, शाम तक आ जाते हैं।
तब उन का सामान, मँगा कर खा जाते हैं ॥२१॥

लड़के लकड़ी बीन, बीन कर ला देते हैं।
ईंधन भर का काम, अवश्य चला देते हैं॥
वृद्ध चचा जल ढोल, घड़ों से भर देते हैं।
माँग माँग कर छाछ, महेरी कर देते हैं ॥२२॥

ठाकुरजी का ठौर, मँगेनू माँग लिया है।
छोटा सा तिरपाल, पुराना टाँग लिया है॥
गूदड़ बोरे बेच, उसारा छवा लिया है।
केवल कोठा एक, दुबारा दबा लिया है ॥२३॥

छप्पर में बिन बाँस, घुने ऐरखड पड़े हैं।
बरतन का क्या काम, घड़ों के खराड पड़े हैं॥
खाट कहाँ दस बीस, फटे से टाट पड़े हैं।
चकिया की भिड़ फोड़, पटीले पाट पड़े हैं ॥२४॥

सरदी का प्रतियोग, न उष्ण-विलास मिलेगा।
गरमी का प्रतिकार, न शीतल-वास मिलेगा॥
घेर रही बरसात, न उत्तम ठौर मिलेगा।
हा! खँडहर को छोड़, कहाँ घर और मिलेगा ॥२५॥

बादल केहरि-नाद, सुनाते बरस रहे हैं।
चहुँ दिश विद्युद्दृश्य, दौड़ते दरस रहे हैं॥
निगल छत्त के छेद, कीच जल छोड़ रहे हैं।
इन्द्रदेव गढ़ घोर, प्रलय का तोड़ रहे हैं ॥२६॥

दिया जले किस भाँति, तेल को दाम नहीं है।
अटके मच्छर डाँस, कहीं आराम नहीं है॥
फिसल पड़े दीवार, यहां सन्देह नहीं है।
कर दे पनियाँढाल, नहीं तो मेह नहीं है॥२७॥

बीत गई अब रात, महा-तम दूर हुआ है।
संकट का कुल हाय, न चकना चूर हुआ है॥
आज भयंकर रुद्र, रूप उपवास हुआ है।
हा! हम सब का घोर, नरक में वास हुआ है॥२८॥

लड़ते हैं मत, पन्थ, परस्पर मेल नहीं है।
सत्य—सनातन—धर्म, कपट का खेल नहीं है॥
सुबुध—साधु सत्कार, कहीं अवशिष्ट नहीं है।
ठगियों में मिल माल, उचकना इष्ट नहीं है॥२९॥

जैसे भारत—भक्त, धर्मधारी मिस्टर हैं।
थानेदार, वकील, डाक्टर बैरिस्टर हैं॥
वैसे उन की भांति, प्रतिष्ठा पासकते हैं।
क्या यों मुझ से रङ्क, कमाई खा सकते हैं॥३०॥

वैदिक—दल में दान, मान कुछ भी न मिलेगा।
पौनपाव अतिवार, हवन को घी न मिलेगा॥
मुनि—महिमालङ्कार, महा-गौरव न मिलेगा।
भोजन, वस्त्र, समेत, गया वैभव न मिलेगा॥३१॥

बपतिस्मा सकुटुम्ब, विशप से ले सकता हूँ।
धन्यवाद प्रभु—गाड, तनय को दे सकता हूँ॥

धन-गौरव—सम्पन्न, पुरोहित हो सकता हूँ।
पर क्या अपना धर्म, पेट पर खो सकता हूँ ॥३२॥

सामाजिक—बल पाय, फूल सा खिल सकता हूँ।
योग-समाधि लगाय, ब्रह्म से मिल सकता हूँ॥
शुद्ध—सनातन—धर्म, ध्यान में धर सकता हूँ।
हा! बिन भोजन-वस्त्र, कहो क्या कर सकता हूँ ॥३३॥

देश-भक्ति का पुण्य, प्रसाद पचा सकता हूँ।
विज्ञापन से दाम, कमाय बचा सकता हूँ॥
लोलुप-लीला भाँति, भाँति की रच सकता हूँ।
फिर क्या मैं कापट्य, पाप से बच सकता हूँ ॥३४॥

जो जगती पर बीज, पाप के बो न सकेगा।
जिस का सत्य-विचार, धर्म को खो न सकेगा॥
जो विधि के विपरीत, कुचाली हो न सकेगा।
वह कंगाल—कुलीन, सदा यों रो न सकेगा ॥३५॥

आज अधम-आलस्य, असुर से डरना छोड़ा।
उद्यम को अपनाय, उपाय न करना छोड़ा॥
मन में भय संकोच, अमङ्गल भरना छोड़ा।
अन्न मिला भरपेट, क्षुधातुर मरना छोड़ा ॥३६॥

शीत—शत्रु १७

(दोहा)

काढ़े प्राण कुरङ्ग के, जिस प्रकार से बाघ।
वैसा ही रिपु शीत का, अटका उग्र-निदाघ ॥१॥

निदाघनिदर्शन १८

(अष्टपदी-छन्द)

बीते दिन बसन्त-ऋतु भागी । गरमी उग्र कोप कर जागी ॥
ऊपर भानु-प्रचण्ड-प्रतापी । भूपर भवके पावक-पापी ॥
आतप,वात मिले रस-रूखे । भावर, झील,सरोवर सूखे ॥
जिन पूरी नदियों में जल है । उन में भी काँदा दलदल है ॥१॥

अवनी-तल में तीत नहीं है । हिमगिरि पै भी शीत नहीं है ॥
पूरा सुमन-विकास नहीं है । और लहलही घास नहीं है ॥
गरम गरम आँधी आती हैं । भुलभुल बरसाती जाती हैं ॥
झाँखर,झाड़,रगड़ खाते हैं । आग लगे बन जलजाते हैं ॥२॥

लपकें लट लूँ लहराती हैं । जल-तरङ्ग सी थहराती हैं ॥
तृषित-कुरङ्ग वहाँ आते हैं । पर न बूँद वन की पाते हैं ॥
सूख गई सुखदा हरियाली । हा ! रस हीन रसा करडाली ॥
कुतल जवासों के न जले हैं । फूल फूल कर आक फले हैं ॥३॥

पावक-बाण दिवाकर मारे । हा ! बड़बानल फूँक पजारे ॥
खौल उठे नद, सागर सारे । जलते हैं जलजन्तु बिचारे ॥
भानु-कृपा न कढ़े वसुधा से । चन्द्र न शीतल करे सुधा से ॥
धूप हुताशन से क्या कम है । हाय ! चाँदनी रात गरम है ॥४॥

जंगल गरमी से गरमाया । मिलती कहीं न शीतल छाया ॥
धमस घुसी तरु-पुंजों मेंभी । निकले भवक निकुंजों में भी ॥
सुन्दर वन,आराम घने हैं । परमरम्य-प्रासाद बने हैं ॥
सब में उष्ण ब्यार बहती है । घाम, धमस घेरे रहती है ॥५॥

फलने को तरु फूल रहे हैं। पकने को फल झूल रहे हैं ॥
पर, जब घोर-घर्म पाते हैं। सब के सब मुरझा जाते हैं ॥
हरि, मृग प्यासे पास खड़े हैं। भूले नकुल, भुजङ्ग पड़े हैं ॥
कङ्क, शचान, कबूतर, तोते। निरखे एक पेड़ पर सोते ॥६॥

विधि! यदि वापी, कूप, न होते। तो क्या हम सब जीवन खोते?॥
पर पानी उन में भी कम है। अब क्या करें नाक में दम है ॥
कभी कभी घन रुपजाता है। वृषारूढ़-रवि छुपजाता है ॥
जो जल बादल से झड़ता है। तो कुछ काल चैन पड़ता है ॥७॥

हरित-बेलि, पोधे मनभाये। बैंगन, काशीफल, फल पाये ॥
ख़रबूज़े, तरबूज़े, ककड़ी। सबने टाँग पित्त की पकड़ी ॥
इमली के बिधु-बाल-कटारे। आम-अपक लुकाट-गुदारे ॥
सरस फ़ालसे श्यामल दाने। ये सबने सुख-साधन जाने ॥८॥

व्यंजन, ओदन आदि हमारे। पेट न भर सकते हैं सारे ॥
गरम रहें तो कम खाते हैं। रखदें तो बस बुस जाते हैं ॥
चन्दन में घनसार घिसाया। पाटल-पुष्प-पराग पिसाया ॥
ऐसा कर परिधान बसाये। वेभी बसन विदाहक पाये ॥९॥

दीपक ज्योति जहाँ जगती है। चयक चञ्चलासी लगती है ॥
व्याकुल हम न वहाँ जाते हैं। जाकर क्या कुछ कर पाते हैं ॥
ग्राम ग्राम प्रत्येक नगर में। घूमें घोर-ताप घर घर में ॥
रुद्र-रोष दिनकर के मारे। तड़प रहे नारी, नर सारे ॥१०॥

भीतर बाहर से जलते हैं। अकुला कर पन्खे झलते हैं ॥
स्वेद बहे तन डूब रहे हैं। घबराते मन ऊब रहे हैं ॥

काल पड़ा नगरों में जलका। मोल मिले उष्णोदक नलका ॥
वह भी कुछ घंटों बिकता है। आगे तनिक नहीं टिकता है ॥११॥

पान करें पाचक जलजीरा। चखते रहें फुलाय कतीरा ॥
बरफ़ गलाय छने ठंडाई। औषधि पर न प्यास की पाई ॥
बँगलों में परदे खसके हैं। बार बार रस के चसके हैं ॥
सुखिया सुख-साधन पातेहैं। इतने पर भी अकुलाते हैं ॥१२॥

अकुला कर राजे महाराजे। गिरि शृङ्गों पर जाय विराजे ॥
धूलि उड़ाय प्रजाके धनकी। रक्षा करते हैं तन, मन की ॥
जितने वुकला बैरिस्टर हैं। वीर बहादुर हैं मिस्टर हैं ॥
सुख से कमरों में रहते हैं। गरजें तो गरमी सहते हैं ॥१३॥

गोरे गुरुजन भोग विलासी। बहुधा बने हिमालय बासी ॥
कातिक तक न यहाँ आते हैं। वहीं प्रचुर-बेतन पाते हैं ॥
निर्धन घबराते रहते हैं। घोर-ताप संकट सहते हैं ॥
दिनभर मुड़बोझे ढोते हैं। तब कुछ खा पीकर सोते हैं ॥१४॥

खलियानों पर दायँ चलाना। फिर अनाज, भूसा बरसाना ॥
पूरा तप किसान करते हैं। तोभी उदर नहीं भरते हैं ॥
हलवाई,भुरजी भटियारे। सौनीभगत, लुहार बिचारे ॥
नेक न गरमी से डरते हैं। अपने तन फूँका करते हैं ॥१५॥

हा! बोयलर की आग पजारे। झपटे झाय लपक लूँ मारे ॥
उड़ती भूभल फाँक रहे हैं। जलते इंजिन हाँक रहे हैं ॥
भानु-ताप उपजावे जिसको। वह ज्वाला न जलावे किसको ॥
व्याकुल जीव-समूह निहारे। हाय! हुताशन से सब हारे ॥१६॥

जेठ जगत को जीत रहा है । काल-विदाहक बीत रहा है ॥
भवक भवूके मार रहे हैं । हाय हाय हम हार रहे हैं ॥
पावक-बाण-प्रचण्ड चले हैं । पञ्च-राज भी बहुत जले हैं ॥
बादल को अवलोक रहे हैं । गरमी की गति रोक रहे हैं ॥१७॥

जब दिन पावस के आवेंगे । वारि बलाहक बरसावेंगे ॥
तब गरमी नरमी पावेगी । कुछ तो ठंडक पड़जावेगी ॥
भाट बने कालानल-रविका । ऐसा साहस है किस कविका ॥
शंकर कविता हुई न पूरी । जलती भुनती रही अधूरी ॥१८॥

पञ्चाग्नि ताप १९

(दोहा)

दिया दिवाली का जला, निरख दिवाला काढ़ ।
होली धूलि प्रपञ्च में, परख पञ्च की बाढ़ ॥१॥

दिवाली नहीं दिवाला है २०

[सुभद्रा-छन्द]

हुआ दिवस का अन्त, अस्त आदित्य उजाला है ।
असित-अमा की रात, मन्द आभा उडु-माला है ॥
चन्द्र-मण्डल भी काला है ।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥१॥

घोर तिमिर ने घेर, रतौंधा रङ्ग जमाया है ।
अन्ध अकड़ में तेज, हीन अन्धेर समाया है ॥
न अगुआ आंखोंवाला है ।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥२॥

उड़ते फिरें उलूक, उजाड़ू गीदड़ रोते हैं।
बिचरें बञ्चक चोर, पड़े घरवाले सोते हैं॥
न किस का टूटा ताला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥३॥

उमग मोहिनी-शक्ति, सुरों को सुधा पिलाती है।
असुरों को विष—रूप, रसीले-खेल खिलाती है॥
झुका अँखियों का झाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥४॥

सुन शतरंजीशाह, बिसात लुटी क्या छोड़ा है।
रहे न फ़ील वज़ीर, न प्यादे बचे न घोड़ा है॥
न जंगी ऊँट झुँगाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥५॥

सज्जन, सभ्य, सुजान, दरिद्र न पूजे जाते हैं।
हा! मद-मत्त अजान, प्रतिष्ठा, पदवी पाते हैं॥
सबल रानी का साला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥६॥

गरमी से अकुलाय, महा—ज्ञानी गरमाते हैं।
सरदी से सकुचाय, नहीं नेता नरमाते हैं॥
घरेलू भेद उबाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥७॥

मतवाले मत, पन्थ, मनाने वाले लड़ते हैं।
बैर, विरोध बढ़ाय, गर्व—गड्ढे में पड़ते हैं॥
अविद्या ने घर घाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥८॥

जिन के अर्थ अनेक, खरे खोटे होसकते हैं।
क्या वे जटिल–कुतंत्र, पराविद्या होसकते हैं॥
कुमति–लूता का जाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ ९॥

सबल–बड़ों के बूट, बड़ाई कहाँ न पाते हैं।
वैदिक–दर्प दबोच, वेदियों पै चढ़ जाते हैं॥
डुबा धी नाम उछाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १०॥

गुरु कुलियों को दान, अकिञ्चन भी देआते हैं।
पर कंगाल–कुमार, न विद्या पढ़ने पाते हैं॥
धनी लड़कों की शाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ ११॥

जननी, पितु की पुत्र, न पूरी पूजा करता है।
अपने ही रस–रङ्ग, भरे भोगों पै मरता है॥
सुमित्रा–बनिता–वाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १२॥

ललना ज्ञान विहीन, अविद्या से दुख पाती हैं।
हा हा नरक समान, घरों में जन्म बिताती हैं॥
महा–माया–विकराला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १३॥

बाधक–बाल–विवाह, कुमारों का बल खोता है।
अमर–कुलों में हाय, बंश–घाती विष बोता है॥

बुरा-काकोदर पाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १४॥

अक्षत-योनि अनेक, बालिका विधवा होती हैं।
पामर-पण्डित पञ्च, पिशाचों को सब रोती हैं॥
न गौना हुआ न चाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १५॥

खडा मदन-विलास, नकीलों को दिखलाती हैं।
करती हैं व्यभिचार, अधूरे-गर्भ गिराती हैं॥
अछूता धर्म-छिनाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १६॥

केशकल्प कर वृद्ध, बालिका-कन्या बरते हैं।
कर मनमाने पाप, न अत्याचारी डरते हैं॥
जरा-जारत्व निकाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १७॥

राजा, धनिक-उदार, मस्त जीने पै मरते हैं।
गोरे-गुरु अपनाय, प्रशंसा, पूजा करते हैं॥
यही लो मान-मसाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १८॥

ठोस-ठसक के ठाठ, ठिकानों पै यों लगते हैं।
उन को खेल खिलाय, पढ़े-पाखंडी ठगते हैं॥
बड़ाई जिन की खाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥ १९॥

आमिष, चरबी आदि, घने नारी, नर खाते हैं।
पशु, पक्षी दिन, रात, कटाकट काटे जाते हैं॥
बहा शोणित का नाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥२०॥

गाँजा, चरस, चढ़ाय, जले जड़ चाँडू से सारे।
पियें मदकची भंग, अफ़ीमी पीनक ने मारे॥
चढ़ी सर्वोपरि हाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥२१॥

गणिका, भडुआ, भाँड़, भटेले मौज उड़ाते हैं।
अवढरदानी सेठ, द्रव्य से पिण्ड छुड़ाते हैं॥
चढ़ी लालों पर ला ला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥२२॥

सेठ—सद्धर्म—शील, पड़े माला सटकाते हैं।
अनघ दुअन्नी तीन, सैंकड़ा व्याज उड़ाते हैं॥
कहो क्या कष्ट कसाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥२३॥

बैरिस्टर, मुख्तार, वकीलों का धन बन्दा है।
नैतिक—तर्क—विलास, न निर्धनता का फन्दा है॥
कमाऊ झगला या ला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥२४॥

थाना—पति-कुल—वीर, न दाता से भी डरते हैं।
धन, जीवन की खैर, हमारी रक्षा करते हैं॥

प्रतापी रौब बिठाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥२५॥

पटवारी प्रण रोप, किसानों का जी भरते हैं।
मासिक से अतिरिक्त, रसीला--चारा चरते हैं॥
हरा प्रत्येक निवाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥२६॥

ठग विज्ञापन बाँट, ठगीका रंग जमाते हैं।
अनुचित सौदा बेच, बेच कल्दार कमाते हैं॥
कपट साँचे में ढाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥२७॥

उन्नति के अवतार, मिलों का मान बढ़ाते हैं।
चरबी चुपड़े चक्र, चक्र पै चाम चढ़ाते हैं॥
अहिंसा का प्रण पाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥२८॥

रहते थे अविकार, अजी जो सुख से जीते थे।
दधि,माखन,घी,खाय, प्रतापी गोरस पीते थे॥
उन्हें हा! छाछ रसाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥२९॥

सम्पति रही न पास, दरिद्रासुर ने घेरे हैं।
बन्धन के सब ओर, पड़े फन्दे बहुतेरे हैं॥
लगा बरछी पर भाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है ॥३०॥

बिचरें मूढ़-विरक्त, अविद्या को अपनाते हैं।
ब्रह्म बने लघु-लोग, कुयोगी पाप कमाते हैं॥
वृथा माला, मृगछाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥३१॥

सुर तेतीस करोड़, मिले पर तोभी थोड़े हैं।
पुजते जड़, चैतन्य, मरों के पिण्ड न छोड़े हैं॥
+पुजापा कहाँ न डाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥३२॥

घेर घेर पुर ग्राम, घने घर सूने कर डाले।
करते मंत्र-प्रयोग, न तोभी मृत्युंजय वाले॥
किसी ने प्लेग न टाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥३३॥

त्राण अनेक अनाथ, गाड-नन्दन से पाते हैं।
कितने ही कुल-वीर, रसूलिल्लाह मनाते हैं॥
हमारा ह्रास निराला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥३४॥

दयानन्द-मुनि-राज, मिले थे शंकर के प्यारे।
वेभी कर उपदेश, हो गये भारत से न्यारे॥
जलाया रजनी ज्वाला है।
दिया जला कर देख, दिवाली नहीं दिवाला है॥३५॥

+घर, घूरा, किवाड़, चौकठ, बरतन, कपड़े, पेड़ पत्थर, धातु-कुम्भ आदि २ सबोंपर पुजापे चढ़ाये जाते हैं।

अन्धेरखाता २१

(साखी)

पञ्च का लेखा दिया सा, दमदमाता देख लो।
आग सा अन्धेर खाता, धकधकाता देख लो ॥१॥

(पञ्चोद्धार—गीत)

इस अन्धेर में रे,
अन्धी चालाकी चमका लो ॥टेक॥

भानु, चन्द्रमा, तारागण से, गुणियों को धमका लों।
गरजो रे बकवादी मेघो, छल—कौंधा दमका लो॥
इ० अं० अं० चा० चमकालो ॥

मोह-अभ्र से ज्ञान-सूर्यका, प्रातिभ—दृश्य दुरा लो।
विद्या-ज्योति विहीन जड़ों का, सुख—सर्वस्व चुरा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

धर्माधार—महामण्डल में, अपनी जीत जता लो।
ब्रह्म-वीर श्री दयानन्द को, हारा शत्रु बता लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

भिन्न मतों के वेष निराले, पन्थ अनेक बना लो।
धर्म-सनातन के द्वारा यों, कुनबा घेर घना लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

मन में श्रद्धा बुद्धदेव की, धींग धसोड़ धसा लो।
मौखिक शब्दों में शंकर का, प्रेम—पवित्र बसा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

झूँठा सब संसार बता दो, सत्य नाम अपना लो।
मायावाद सिद्ध करने को, रज्जु, सर्प, सपना लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो,॥

"सोहमस्मि" से वेद विरोधी, मायिक मंत्र सिखा लो।
परमतत्व भूले जीवों को, ब्रह्म-सरूप दिखा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

कूट-कल्पना के प्रवाह में, वाद, विवाद बहा लो।
कर्महीन केवल बातों से, जीवनमुक्त कहा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

निर्विकार-अद्वैत—एक में, द्वैत-विकार मिला लो।
मायामय-मिथ्या-प्रपञ्च के, सब को खेल खिला लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

पौराणिक-देवों के दल को, अपनी ओर झुका लो।
भक्ति-भाव-लीला में उन के, खोट, कलङ्क लुका लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

भूत, भूतनी, प्रेत, मसानी, मियाँ, मदार, मना लो।
ठीक ठिकानों पै ठगई के, जाल, वितान तना लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

चेतन के पंजे जड़ता पै, गाल बजाय जमा लो।
पिण्डी, प्रतिमा पूज, पुजा लो, वित्त-विशुद्ध कमा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

भोले भावुक-यजमानों को, डाँट डराय हिला लो।
मारो माल मरे पितरों को, सोदकपिण्ड दिला लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

उमगे लीला अवतारों की, मानव रास रचा लो।
छैल छोकड़ों की छवि देखो, उद्धत-नाच नचा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

पञ्च मकारी कौल-चक्र में, परमप्रसादी पा लो।

श्री जगदीश-पुरी में जा के, सब की जूठन खा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
राम नाम लेकर पापों के, भार अतोल उठा लो ।
हरि भक्तो! हलके होने को, सुरसरिता में न्हा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
जन्मकुण्डली झाड़ जाल की, दिव्य आग दहका लो ।
खेट खरे, खोटे बतला के, धनियों को बहका लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ।
साधु कहालो भण्डभीड़ में, षण्ड-समूह सटा लो ।
रोट खाय पाखण्ड-फण्ड के, लण्ठो! लहर पटा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
कामदेवता के अङ्कुश में, लोह-कड़ा लटका लो ।
नङ्गनाच रचलो बाबाजी, चिमटे को चटका लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
मुंज-मेखला बाँध गले में, कठकण्ठे लटका लो ।
मादकता की साधकता में, योग-ध्यान अटका लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
अपने अन्यायी जीवन की, धुँधली ज्योति जगा लो ।
निन्दा करो महापुरुषों की, ठगलो और ठगा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
भारत की भावी उन्नति का, मुख से पान चबा लो ।
चन्दा ले कर धर्म कोष को, सब के दाम दबा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ।
हाँ उपदेशामृत पीने को, श्रोता वदन उबा लो ।
शुद्ध सत्य-सागर में सारे, भ्रम, सन्देह डुबा लो ॥

इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

माता, पिता और गुरु पत्नी, सब से शुभ-शिक्षा लो ।
जामदग्न्य, प्रह्लाद, चन्द्र की, भाँति सुयश-भिक्षा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

गरमी, नरमी की माया को, डौल बिगाड़ डुला लो ।
कूदफाँद जातीय सभा का, उन्नत-काल बुला लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

पाय चाकरी धर्म कमालो, खाकर घूँस पचा लो ।
मौज उड़ालो मासिक से भी, तिगुना बित्त बचा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

देशी उद्यम की उन्नति का, गहरा रंग रँगा लो ।
अन्न विदेशों को भिजवा दो, काठ कबाड़ मँगा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

मूल ब्याज, की मार धाड़ से, ऋणियों को पटका लो ।
ध्यान धरो पौढ़े ठाकुर का, कर माला सटका लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

लड़की लड़कों के ब्याहों में, धन की धूलि उड़ा लो ।
नाक न कटने दो, निन्दा से, कुल का पिण्ड छुड़ा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

बच्ची, बच्चों मिल मण्डप में, बैठो मन बहला लो ।
गौरि, गिरीश, रोहिणी, चन्दा, कन्या, वर, कहला लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

पीले हाथ करो दुहिता के, दस तोड़े गिनवा लो ।
बरनी के बाबा से बर पै, नाक चने बिनवा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

विद्या—हीन-अंगना-गण के, उन्नत—अंग नवा लो।
पिसवा लो, खाना पकवा लो, बकने गीत गवा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

बिधवा-दल के दुष्कर्मों से, घर का मान घटा लो।
हत्यारे बनकर पञ्चों में, कुल की नाक कटा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

खेलो जुआ हार धन, दारा, मार कुयश की खा लो।
नल की पदवी से भी आगे, धर्मपुत्र-पद पा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

रंडी पर चोटी तक वारो, मुतफुल्ली उड़वा लो।
ख़ैरूलमाकरीन से ख़ाँजी, मक्र-छूत छुड़वा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

मदिरा, ताड़ी, भंग, कसूमा, पीलो अमल खिला लो।
धूँसो धुँआँ चरस, गाँजे में, चँडू, मदक मिला लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

सोंध सड़ेगुड़ में तम्बाकू, घान घने कुटवा लो।
आदर मान बढ़े हुक्के का, भारत को लुटवा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

होली के हुल्लड़ में रसिको, रस के साज सजा लो।
हिन्दूपन के सभ्यभाव का, ढिल्लड़ ढोल बजा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

वैदिक-वीरो! अन्ध-यूथ में, तुम भी टाँग अड़ा लो।
बाँट बड़ाई का बढ़िया से, बढ़िया और बड़ा लो॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो॥

माँगो गुरुकुल के मेलों में, मंगल-कोश बढ़ा लो।

भिक्षा को उलटी लटका दो, शुल्कद-शिष्य पढ़ा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
कुल—वीरों को पाठ-पछाड़ू, पट्ठुओं से पढ़वा लो ।
ग्रन्थों में हुरदङ्ग, पोप से, प्रेम—शब्द बढ़वा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
धीरो! व्याह करो विधवा का, धर्म—सुधा बरसा लो ।
फिर दे दण्ड धींग-पञ्चों को, पाप—दृश्य दरसा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
युक्ति-वाद से छद्म-वाद की, खाल खींच कढ़वा लो ।
पै संगीत और कविता पै, धर्म—दोष मढ़वा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
ढोल, चिकारे की मिल्लत में, करतालें खड़का लो ।
राग, रागनी, ताल, स्वरों को, तोड़ो! तन फड़का लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
वेदों की वेदी पर चढ़ लो, ऊल ऊल कर गा लो ।
कोरी कर ताली पिटवा लो, थोरी धिक धिक था लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
तुक्कड़ लोगो! तुकबन्दी पै, हित का हाथ फिरा लो ।
श्री कविता देवी के सिर से, मान—किरीट गिरा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
हाय! अजानों के दंगल में, झूँठी ठसक ठँसा लो ।
सिद्ध प्रतापी कविराजों पै, हँस लो और हँसा लो ॥
इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥
वक्ता जी शुभ-कर्म-कथा पै, बस हाँमी भरवा लो ।
पर देखें सब श्रोताओं से, पञ्चयज्ञ करवा लो ॥

इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

शङ्कर जी पहले पापों का, पलटा आप चुका लो।
औरों से क्यों अटक रहे हो, अपनी ओर थुका लो ॥

इ० अं० अं० चा० चमका लो ॥

पड़ी बोली में पञ्च प्रलाप २२

(दोहा)

बस बिन्ने कीनी बुई, झट्ट सुनलई बात।
जैबिल्ले भकुआ भकें, बढ़पतिया कौ भात ॥१॥

पञ्च फैसला २३

(षट्पदी-छन्द)

हिल मिल पोंगा-पञ्च, कतौअत निच्चे जाने।
हम हिन्दू न असत्त, आरिया मत को माने ॥
चों बिसार कुल-रीत, बिगारें गैल पुरानी।
ठाकुर पकरें बाँयँ, करें रच्छा ठकुरानी ॥
भाँ मन मानी माया मिले, भाँ खातर भरपूर हो।
तू छेकौ संकर जात ने, बोल "नमसते" दूर हो ॥१॥

विचित्रोल्लास की विचित्रता २४

(दोहा)

पञ्चराज के तेज का, जिस में बसे बिलास।
पूरा होसकता नहीं, वह विचित्र उल्लास ॥१॥

* अनिति *

उपसंहार

अर्थात् पूर्णोद्धास का अन्तिम अंश

काल की चाल (दोहा)

जाता है टिकता नहीं, अस्थिर काल-कराल ।
देखो ! इस की दौड़ में, चुके न किसकी चाल ॥ १ ॥

जीवन-काल

(गीत)

जीवन बीत रहा अनमोल,
इस को कौन रोक सकता है ॥ टेक ॥

चलता काल टिके कब हाय, सटके सबको नाच नचाय,
लपका लपके किसे न खाय, अस्थिर नेक नहीं थकता है ।
जी० बी० र० अ० इ० कौ० रो० सकता है ॥

हायन, मास, पक्ष, सित, श्याम, तैथिक-मान, रात, दिन, याम,
भागें घटिका, पल, अविराम, त्रुटि का भी न पैर पकता है ॥
जी० बी० र० अ० इ० कौ० रो० सकता है ॥

सरके वर्तमान बन भूत, गति का गहै अनागत सूत,
त्रिकली-द्रुतगामी-रवि-दूत, किस की छाक नहीं छकता है ।
जी० बी० र० अ० इ० कौ० रो० सकता है ॥

सब जग दौड़े इस के साथ, लगता हा ! न बिपल भी हाथ,
सुनलो रङ्क और नरनाथ, शङ्कर वृथा नहीं बकता है ॥
जी० बी० र० अ० इ० कौ० रो० सकता है ॥ १ ॥

काल-कौतुक (दोहा)

तीन तनावों से तना, जिस का अस्थिर-जाल ।
हाँक रहा संसार को, अविरामी वह काल ॥ १ ॥

काल का वार्षिक–बिलास

(सुभद्रा-छन्द)

सविता के सब ओर, महीमाता चकराती है।
घूम घूम दिन, रात, महीना, वर्ष, बनाती है॥
कल्प लों अन्त न आता है।
हा ! इस अस्थिर-काल, चक्र में जीवन जाता है॥ १॥

(चैत्र)

छोड़ छदम–प्राचीन, नये–दल वृक्षों ने धारे।
देख ! बिनाश, विकाश, रूप, रूपक न्यारे न्यारे॥
दुरङ्गी चैत दिखाता है।
हा ! इस अस्थिर–काल, चक्र में जीवन जाता है॥ २॥

(वैशाख)

सूख गये सब खेत, सुखादी सारी हरियाली।
गहरी तीत निचोड़, मेदिनी रूखी कर डाली॥
धूलि वैशाख उड़ाता है।
हा ! इस अस्थिर–काल, चक्र में जीवन जाता है॥ ३॥

(ज्येष्ठ)

झील, सरोबर फूँक, पजारे नदियों के सोते।
व्याकुल फिरें कुरङ्ग, प्राण मृगतृष्णा पै खोते॥
जलों को जेठ जलाता है।
हा ! इस अस्थिर–काल, चक्र में जीवन जाता है॥ ४॥

(आषाढ़)

दामिनि को दमकाय, दहाड़े धाराधर धाये।
मारुत ने झकझोर, झुकाये झूमे झर लाये॥
लगी आषाढ़ बुझाता है।
हा ! इस अस्थिर–काल, चक्र में जीवन जाता है॥ ५॥

(श्रावण)

गुल्म, लता, तरु-पुञ्ज, अनूठे-दृश्य दिखाते हैं।
बरसे मेह बिहङ्ग, बिलासी मङ्गल गाते हैं॥
झुलाता श्रावण भाता है।
हा! इस अस्थिर—काल, चक्र में जीवन जाता है॥६॥

(भाद्रपद)

उपजे जन्तु अनेक, झिलारे झील, नदी, नाले।
भेद मिटा दिन, रात, एक से दोनों कर डाले॥
मघा भादों बरसाता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है॥७॥

(आश्विन)

फूल गये सर, काँस, बुढ़ापा पावस पै छाया।
खिलने लगी कपास, शीत का शत्रु हाथ आया॥
कृषी को क्वार पकाता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है॥८॥

(कार्तिक)

शुद्ध हुये जल, वायु, खुला आकाश खिले तारे।
बोये विविध-अनाज, उगे अङ्कुर प्यारे प्यारे॥
दिवाली कातिक लाता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है॥९॥

(मार्गशीर्ष)

शीतल बहै समीर, सबों को शीत सताता है।
हायन भर का भेद, जिसे दैवज्ञ बताता है॥
अग्रहायन से पाता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है॥१०॥

(पौष)

टपके ओस, तुषार, पड़े जमजाता है पानी।
कट कट बाजें दाँत, मरी जल शूरों की नानी॥

पुजारी पौष न न्हाता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है ॥११॥

(माघ)

हुआ मकर का अन्त, घटी सरदी अम्बा बौरे।
विकसे सुन्दर-फूल, अरुण, नीले, पीले धौरे ॥
माघ मधु को जन्माता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है ॥१२॥

(फाल्गुन)

खेत पके अब आँख, ईश ने उन्नति की खोली।
अन्न मिला भर पूर, प्रजा के मन मानी होली ॥
फाल्गुन फाग खिलाता है।
हा! इस अस्थिर काल चक्र में जीवन जाता है ॥१३॥

(अधिमास)

विधु से इन का अब्द, बड़ाई इतनी लेता है।
जिस का तिगुना मान, मास पूरा कर देता है ॥
वही तो लोंद कहाता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवनजाता है ॥१४॥

(कवि का पछतावा)

किया न प्रभु से मेल, करेगा क्या मन के चीते।
अबलों बावन वर्ष, वृथा शङ्कर तेरे बीते ॥
न पापों पै पछताता है।
हा! इस अस्थिर काल, चक्र में जीवन जाता है ॥१५॥

पूर्णोद्गासका भावार्थ (दोहा)

अन्धकार-अन्धेर का, अब न रहैगा पास।
राग रत्न--का पारखी, परख! पूर्ण उद्गास ॥१॥

इति

वाचक वृन्द! पूर्णोद्गास की पूर्णता द्वितीया वृति में देखेंगे।

सङ्गीत

अर्थात

(नादविद्या)

नादेन व्यञ्जते वर्णो, पदेवर्णात्पदाद्वचः ।
वचसो व्यवहारोऽयं, नादाधीनं मतंजगत ॥

(सङ्गीत के मुख्य अङ्ग)

साहित्य १ स्वर २ ताल ३ रस ४ ।

(ध्वनि)

मन्द्र-ध्वनि १=जो नाभि से हृदय तक सञ्चार करती है ।
मध्य-ध्वनि २=जो हृदय से कण्ठ तक संचार करती है ।
तार-ध्वनि ३=जो कण्ठ से कपाल तक संचार करती है ।

(स्वर)

षड्ज १ ऋषभ २ गान्धार ३ मध्यम ४ पञ्चम ५ धैवत ६ निषाद ७ ।

(स्वरभेद)

आरोही १=षड्ज से ऊपर की ओर टीप तक जानेवाला (स्वर)
यथा, स-रि-ग-म-प-ध-नि ।

अवरोही २=टीप से षड्ज की ओर उलटा उतरनेवाला (स्वर)
यथा, नि-ध-प-म-ग-रि-स ।

(ग्राम)

उदारा १ (षड्ज) मुदारा २ (मध्यम) तारा ३ (गान्धार)

(मूर्छना)

उत्तरमन्दा १ रञ्जनी २ उत्तरायता ३ सत्स्वरा ४ कृत्या ५ धारिका ६ अश्वक्रान्ता ७ सौवीरा ८ अभिरुद्रता ९ हारिनासवा १० इला ११ कलोपनता १२ शुद्धमध्यमा १३ भोगी १४ ऋषिका १५ पौरवी १६ नन्दा १७ सुमुखी १८ मुखाविचित्रा १९ रोहिणी २० आलापी २१ ।

(आलाप)

ग्राम १=आलाप के आदि में आनेवाला स्वर ।

न्यास २=आलाप के अन्त में आनेवाला स्वर ।

मूर्छना ३=आलाप को विश्राम देकर प्रवाहित करनेवाला स्वर ।

अंश ४=आलाप में बारम्बार निकलनेवाला स्वर ।

पक्कस्वरूप ५=आलापमें स्पन्दन (गिटकिरी) से निकलनेवाला स्वर

(रागजाति)

औडव १=जो राग पाँच स्वरों में गाया जाता है। स-रि-ग-म-प

षाडव २=जो राग छै स्वरों में गाया जाता है। स-रि-म-म-प-ध

सम्पूर्ण ३=जो राग सातों स्वरोंमें गाया जाता है। स-रि-ग-म-प-ध-नि

(राग)

भैरव १ मालकोस २ हिण्डोल ३ दीपक ४ श्री ५ मेघ ६ ।

(रागिणी)

(भैरव राग की रागिणी)

भैरवी १ वैराड़ी २ मधुमाधवी ३ सिन्धवी ४ बङ्गाली ५ ।

(मालकोस राग की रागिणी)

टोड़ी १ गौरी २ गुनकली ३ खम्भावती ४ कुकुभ ५ ।

(हिण्डोल रागकी रागिणी)

रामकली १ देशाख २ ललित ३ बिलावल ४ पटुमञ्जरी ५ ।

(दीपक राग की रागिणी)

देशी १ कामोदी २ नट ३ केदारा ४ कान्हड़ा ५ ।

(श्री राग की रागिणी)

मालव १ धनाश्री २ बसन्त ३ मालश्री ४ आसावरी ५ ।

(मेघ राग की रागिणी)

टङ्क १ मल्लारी २ दक्षिणगूजरी ३ भूपाली ४ देशकारी । ५ ।

(बाजे)

तत १=वीणा के समान तारवाले बाजे। (१)

अनुवद्ध २=पखावज के समान चर्मवाले बाजे। (१)

सुखिर ३=बाँसुरीं के समान फूँक से बजनेवाले बाजे। (१)

घन ४=मंजीरा के समान ठोकर से बजनेवाले बाजे। (½)

(गायन-दोष)

मुख को अधिक फाड़ना १ दांत घिसना २ गाल फुलाना ३ आंखें मींचना ४ अति बेग से गान ५ विकराल स्वर ६ काक स्वर ७ स्वरभङ्ग ८ बेताला ९ लय, तान हीन १० आदि आदि इस प्रकार अनेक·गुण दोषों के ज्ञाता संगीत-विद्या-विशारद सु-मधुर गायकगण गाते थे, गाते हैं और गावेंगे, परन्तु आज कल बहुधा तुकड़ों की गढ़न्त के गितक्कड़ अजान लोगों से तालियां पिटवा कर अपने को गायनाचार्य मान रहे हैं (धन्य उनका साहस) परमात्मन् ! इस "अनुराग-रत्न" को अच्छे गवैया गावें, अभिज्ञ श्रोता सुनें, विचारशील पुरुष पढ़ें और समझें यही प्रार्थना है।

सेवक बिनीत,

नाथूराम शंकर शर्मा (शंकर,)

हरदुआगंज, (अलीगढ़)।

अनुरागरत्न का शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	३	महदुद्योत	वृहद्‌दुद्योत	१३२	१०	बुलवाय	बुलाय
२६	१५	नलिप	निर्लेप	१७२	६	वाम	नाम
३०	१७	त्रिश्वक	त्रिश्वका	१८६	१३	उलें	ऊलें
३६	१६	उज्वल	उज्ज्वल	१६०	१३	डेड़	डेढ़
४०	१२	दम्म	दम्भ	२११	२२	ध्रुव	ध्रुव
८८	५	एरमधर्म	परमधर्म	२१३	२२	उस	जिस
१०४	६	महज्जन	महाजन	२२६	१८	विहार	विलास
१०४	२१	उलरहे	ऊलरहे	२३१	७	मेरे	पाये
१२४	२०	तन	तज	२३५	७	निगला	गटका
१३०	११	त्रिटिप	विटप	२४७	१६	जमया	जमाय

(भद्रोद्गास पृष्ठ १०८)

हेत्वाभास का उपहास ५८ (गीत)

इस गीत का दूसरा चरण छपने से रह गया है, वह यों है :-

ध्रुवनन्दा में न्हाय देह के, मल को धो सकता है।
सत्य बिना मन के पापों को, कौन डुबो सकता है ॥
सा० ध० क० न होसकता है ॥

(विचित्रोद्गास पृष्ठ २०९)

(पञ्चचामर वृत्त)

इस वृत्त के ऊपर का शीर्षक नहीं छपा, वह यों है:-

पञ्चामृत-प्रवाह ?

संशोधन ठीक न होने के कारण बहुधा ! ऐसे चिन्हों के स्थानों में ? ऐसे चिन्ह छप गये हैं, पाठक क्षमा करें। (प्रकाशक)